Plumwood, Val (1992), Gender and Ecology: Feminism and Making of Nature, London: Routledge.

B.A.III – 6th Semester

Paper-1 Rural Society: Structure and Change

(13)

Page - (1)

UNIT – I

Introduction to Rural Sociology: Origin, Nature, Subject Matter and Importance.

UNIT – II

Rural Social Structure: Caste and Class in Rural Set Up, Inter Caste Relation with reference to Jajmani

System; Rural Family and Changing pattern

UNIT – III

B.A.III – 6th Semester

Paper-1 Rural Society: Structure and Change

.

(13)

UNIT – I

Introduction to Rural Sociology: Origin, Nature, Subject Matter and Importance.

UNIT – II

Rural Social Structure: Caste and Class in Rural Set Up, Inter Caste Relation with referenc to Jajmani

System; Rural Family and Changing pattern

UNIT – III

Q. ग्रामीण एवं नगरीय संबंधो का तुलनात्मक व्याख्या करे?

'अथवा'

ग्रामीण समाज एवं नगरीय समाज के संबंधो एवं इसके ~~विशेष~~ विभिन्नताओ की चर्चा करें।

कुछ विद्वान का यह स्पष्ट मत है कि, ग्रामीण और नगरीय जीवन पद्धति दो भिन्न व्यवस्थाऐ है। इसलिए इसका अध्ययन भी भिन्न-भिन्न रूप से किया जाना चाहिए। इस दृष्टि से ग्रामीण समाजशास्त्र और नगरीय समाजशास्त्र दो पृथक विषयो का कालान्तर मे विकास हुआ ग्रामीण समाजशास्त्र के विद्वानो ने ग्रामीण समाज की अध्ययन की स्वतंत्र पद्धति का विकास किया और नगरीय समाजशास्त्र के विचारको ने नगरीय समाजशास्त्र के अध्ययन का एक नया स्वरूप प्रदान किया। अध्ययन की दृष्टि से दोनो क्षेत्रो को पृथक करने के लिए ग्रामीण नगरीय समाज के परस्पर भेदो को उजागर किया।

विभिन्न विद्वानो ने इस संदर्भ मे अपना विचार प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।

G. B कैटर का विचार है कि—

"यदि ग्रामीण और नगरीय समाजशास्त्र को उनके संरक्षक अनुशासन के विशिष्ट उपक्षेत्रों को विस्तार रखना है और अर्थपूर्ण अवधारणात्मक आधार पर अन्य उपक्षेत्रो से इन्हे भिन्न रखना है, तो एक नवीन दिशामार्ग की आवश्यकता स्वंय सिद्ध होगा

बरट्रैन्ड का मत है कि—

"~~ग्रामीण~~ स्पातन्त्र सिद्धान्त के प्रवर्तक यह अनुभव करते है कि, ग्रामीण नगरीय विभेद तुलनात्मक अर्थो मे है और दो ध्रुवीय अतिरिको ग्रामीण और नगरीय के मध्य एक

B.A, Sem - 6th Page-2

Rural Economy: Land Tenure System, Land Reforms; Green Revolution and Its Impact; Bonded and
Migrant Labourers; Major Changes in Rural Society.

UNIT – IV

Rural Political Structure: Traditional Caste and Village Panchayats; Panchayati Raj before and after 73rd
Constitutional Amendment, Panchayati Raj and Empowerment of Women

Readings:

Desai, A.R. (1996): Rural Sociology in India, Bombay: Popular Prakashan.
Desai, A.R. (1979): Rural India in Transition, Bombay: Popular Prakashan.
Dube, S.C. (1988): India's changing Village: Human Factor in Community Development, Bombay: Himalayan Publishing House.
Maheshwari, S.R. (1985): Rural Development In India, New Delhi: Sage Publication.
Pradhan, P.K. (1988): Land, Labour and Rural Poverty, Bombay: Himalayan Publishing House Ltd.
Ranbir, D.T.(1966) : Bharat Mein Jati aur Varg, Bombay: Popular Prakashan.
Vidyarthi, L.P.(1967): Leadership in India, Bombay: Asia Publishing House.
Razvi, Shahra (2003): Agrarian Change, Gender and Land Rights (Ed): Blackwell.
Vivek, R.& Bhattacharya (1885) : The New Strategies of Development in Village India, Metropolitan
Govt. of India (2010): India Year Book 2010: Publication Division, Govt. of India

सीमित नहीं होती बल्कि उन क्षेत्रो मे भी प्रवेश करती है जो नगर के निकट गाँव है जिन्हे हम नगर तुल्य गाँव कहते है। कालान्तर मे नगर का निकटवर्ती ग्रामीण जीवन नगरीकृत होता जाता है। महानगरो के निकट जो गाँव है, उनका जीवन नगरीकृत हो जाता है। ये क्षेत्र नगरीकृत ग्रामीण क्षेत्र के रूप मे जाने जाते है। लंदन के एक गाँव के अध्ययन करते हुए यह देखा गया है कि 40-50 मील की दूरी पर कुछ लोग बस गये थे। क्योंकि लंदन मे आवास की समस्या अत्यन्त गंभीर होती चली जा रही थी। अतः लंदन के निवासी निकटवर्ती गाँवो मे मकान बनाकर निवास करने लगे। यातायात और संदेश वाहन के क्षेत्र मे प्रगति होने से इन महानगरीय गाँवो मे नगरीकरण की प्रक्रिया को गति प्राप्त हुई। भारत मे भी इस उदाहरण को देखा जा सकता है। जैसे- मुम्बई के उच्च मध्य वर्ग के व्यक्ति ने मुम्बई जैसे महानगर मे मकान न बनाकर मुम्बई से दूर अपना निवास स्थान बना रहे है इन्हीं सब कारणो की वजह से नगरीय एवं ग्रामीण क्षेत्रों मे जो संपर्क है, वह बनी रहती है और जिसके फलस्वरूप नगरीय मानसिकता, विचार, लोकरीतियां आदि आपस मे घुल-मिल जाती है और आज के युग मे यातायात, दूरसंचार तथा मीडिया के विकास के फलस्वरूप नगर एवं ग्रामीण क्षेत्रो मे न सिर्फ बाह्य रूप से संपर्क हो रहे है बल्कि विभिन्न पुल एवं पुलियो के बन जाने से आवागमन तेज हो गये है और विभिन्न प्रकार के उद्योगो से बने वस्तु ग्रामीण क्षेत्र मे आ रहे है तथा ग्रामीण क्षेत्र के कुटीर उद्योगो द्वारा बनाये गये वस्तु भी बड़ी आसानी से

साथ पहुँच रहे है इसका दूसरा सबसे बड़ा कारण है कि सामाजिक गतिशीलता व बढ़ आन्तरिक प्रवासी प्रवृत्ति में बढ़ोत्तरी के फलस्वरूप विभिन्न प्रकार की नगरीय संस्कृतियाँ गाँव में समा गई हो जहाँ ग्रामीण क्षेत्र के लोग निश्छल, निष्कपटी, सादा-जीवन वाले व्यक्ति रहनेवाले थे वहीं इन गतिशीलता के कारण उनके अंदर भी छल कपट आ गई हो यही नहीं बल्कि ग्रामीण क्षेत्रों में भी शहरी परिवेश कम देखने को नहीं मिलती हो

उपर्युक्त विवेचनाओं के आधार पर यह कहा जा सकता है कि आधुनिक युग में कोई भी ऐसा गाँव समाज या शहर हो जो एक दूसरे से न जुड़े हुए हो इसका सबसे बड़ा कारण है कि प्रौद्योगिकीय विकास ने आज हम तकनीकी मामलों में इतना ऊँचा उठ गये हैं कि दिल्ली में रह रहे प्रधानमंत्री की वार्ता हाईटेक के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्र की जनता भी कर लेते हो आधुनिक युग में तो किसी ग्रामीण क्षेत्र में बने विशाल पुल का उद्घाटन दिल्ली से ही प्रधानमंत्री कर देते हो इस तरह आधुनिक युग में यह कहना सरासर कहना मिथ्या होगा कि अभी तक कोई गाँव शहरों से जुड़ा ही नहीं, इन जुड़ाव के कारण शहरी हाव-भाव व्यक्ति के संपर्क ग्रामीण जीवन पद्धति में बदलाव आया हो

~~श्रेणी मे विभक्त होते हैं।~~

ग्रामीण नगरीय सतत्य की अवधारणा को विशेष रूप से प्रोफेसर स्मिथ ने विकसित किया। लेकिन ग्रामीण और नगरीय विभेदीकरण को रेड फिल्ड, सोरोकिन, जिम्मरमैन, विर्थ, वेबर का भी काफी योगदान रहा है ग्रामीण नगरीय सतत्य एक आधुनिक प्रक्रिया है जो किसी भी ग्रामीण अथवा नगरीय क्षेत्र मे प्रवेश कर अपने प्रभाव को डालना आरम्भ करती है यह एक ऐसी घटना है, जो अंशो मे प्रतिबिंबित होती है वास्तव मे आधुनिक समाज मे किसी भी सामाजिक घटना को पूर्ण रूप से न ग्रामीण कह सकते हैं, न पूर्ण रूप से नगरीय ग्रामीण समाज छोटा पर संगठित होता है यहाँ सामाजिक परस्परता का क्षेत्र अत्यन्त सीमित होता है पर सम्पर्क जो भी संपर्क के माध्यम से सामाजिक संबंध बनते है उनमे घनिष्ठता तथा स्थायित्व की प्रक्रिया अधिक होती है ग्रामीण समाज अपने छोटे से क्षेत्र से बंधा होता है इसके सामाजिक संबंधो का दायरा इसलिए भी सीमित होता है यही कारण है कि इनके परस्पर संबंधो मे एकरूपता अधिक और विभिन्नता कम होती है इन्ही एक कारणो से उसके विचार, सोच, दृष्टिकोण, मनोवृत्ति आदि संकुचित होते है इसके विपरीत नगरीय समाज मे सामाजिक संबंधो मे सरलता नही होती है नगरीय सामाजिक संबंधो का जाल जटिल होता है नगर मे प्रत्येक व्यक्ति के संपर्क मे आता है इसलिए नगरीय सामाजिक संबंधो मे औपचारिकता, व्यक्तिवादी, कृत्रिमता आदि के चिह्न ही देखने मिलते है ये विशेषताएं नगर की सीमा तक ही

बच्चे को शहरी स्कूल में भेजने से मना करता है तो इसका उद्देश्य है कि वह अपने बच्चे को 'शहरिया' बनाना चाहता। 'शहरिया' शब्द मूल्यों के एक समूह को प्रकट करता है जो उन मूल्यों से भिन्न है जिनसे गांव वाले परिचित हैं और जिन्हें वे पीढ़ियों से अपनाये हुए हैं। ग्रामीण नगरीय भेद ने ही भारत की परम्परागत संस्कृति को जीवित रखा है अन्यथा हमारे यहां कोई चर्च जैसी व्यवस्था नहीं रही है जो प्राचीन धर्म, धार्मिक सांस्कारिक व्यवहारों, संस्कृति, लोकगीत, हिन्दू धर्म, आदि की रक्षा करती। गांव और नगर का भेद ही गांवों को शहरों के समान नहीं होने देता। गांवों की भावात्मक व्यवस्था व मूल्य-व्यवस्था ही गांवों को परिवर्तन से रोकती है। अत: स्पष्ट है कि गांव की एक संस्कृति, एक मूल्य-व्यवस्था और भावात्मक व्यवस्था होती है। गांव की एक विशिष्ट जीवन-विधि निर्मित करते हैं और उसे एक अवधारणा के रूप में प्रस्तुत करते हैं।

गांव : एक जीवन-विधि : एक अवधारणा
(VILLAGE : A WAY OF LIFE : A CONCEPT)

डॉ. मजूमदार ने गांव की एकता को एक दूसरे दृष्टिकोण से देखा है। वे गांव को एक जीवन-विधि (Way of life), एक अवधारणा (a concept) के रूप में परिभाषित करते हैं। गांव एक इकाई, एक सम्पूर्णता (a unity, a whole) भी है। इस नाते गांव के सभी लोगों की एक संगठित जीवन-विधि (Way of life), विचार, अनुभव और संस्कृति होती है। प्रत्येक गांव का एक भूतकाल होता है, एक मूल्य व्यवस्था, एक भावात्मक व्यवस्था (Sentimental system) होती है। सभी लोगों का सम्बन्ध भूतकाल के गहरे अनुभवों से होता है। इस नाते गांव एक पृथक् इकाई है। किन्तु इसका दूसरा पक्ष यह है कि ये सभी विशेषताएं केवल गांव की सीमा तक ही सीमित नहीं होतीं। गांव वालों के नातेदारी सम्बन्ध गांव में ही नहीं, वरन् आसपास के गांवों में भी होते हैं। सामाजिक, राजनीतिक एवं प्राकृतिक संकटों के समय गांवों के लोग परस्पर सहायता करते हैं। अतः इस रूप में गांव को एक पृथक् इकाई मानना उचित नहीं है। प्रत्येक गांव देश की सम्पूर्ण समाज व्यवस्था से विभिन्न स्तरों पर जुड़ा हुआ है। गांव वालों के सम्बन्ध बाहर की दुनिया से भी है। गांव की बेटियां विवाह करके गांव से बाहर जाती हैं तो बहुएं गांव में बाहर से आती हैं। परिवार की परम्पराएं और मूल्य उनके साथ जुड़े होते हैं जो ग्रामीण जीवन में अचानक होने वाले परिवर्तनों को स्वीकार करने में बाधक होते हैं। यदि हम गांवों की उपर्युक्त संचार व संरचनात्मक व्यवस्था पर ध्यान दें तो गांव एक सम्पूर्णता के रूप में दिखाई देगा।

गांव में अनेक विभिन्नताएं और असमान्तएं विद्यमान हैं। वहां जातियों के आधार पर मोहल्ले बने होते हैं। उच्च एवं निम्न जातियों के बीच विचारों, विश्वासों, व्यवहारों, शिक्षा, आय, जीवन-आदतों और अन्तर्जातीय सम्बन्धों में अनेक विभेद पाये जाते हैं। उच्च एवं निम्न जातियां परिवर्तन के दौर में हैं, अन्तर्जातीय सम्बन्धों में भी परिवर्तन हो रहे हैं। इन सभी घटनाओं के बावजूद भी वर्षों से साथ-साथ रहने एवं सहयोग करने, धार्मिक एवं आर्थिक जीवन में आदान-प्रदान करने, समान हितों और समस्याओं में भागीदार होने के कारण गांव एक संगठित इकाई दिखाई देता है।

गांव एक जीवन-विधि (Way of life) और अवधारणा (Concept) दोनों ही है। बाहरी सम्पर्क के बावजूद भी गांव वाले अपना जीवन उसी तरह व्यतीत कर रहे हैं जैसा वे भूतकाल में व्यतीत करते थे। गांव की जीवन-विधि नगर से पृथक् है। जब तक गांव अपना व्यक्तित्व बनाये रखेंगे जैसे कि अब तक बनाये रखा है अथवा जब तक ग्रामीण मूल्य समूह में परिवर्तन नहीं आता है तब तक गांव एक अवधारणा के रूप में भी मौजूद रहेंगे। **डॉ. मजूमदार** का मत है कि गांव और नगर के बीच आदान-प्रदान की जो प्रक्रिया है (Rural-urban continuum), वह भारत में दिखाई नहीं देती। भारत में ग्रामीण एवं नगरीय मूल्य एवं जीवन विधि भिन्न-भिन्न हैं। जो गांव शहर के पास बसे हुए हैं, उनमें भी अपनी ग्रामीण मूल्य-व्यवस्था बनी हुई है और वे गांव नगरों में परिवर्तित नहीं हुए। यहां तक कि वे गांव जिनकी जनसंख्या 5,000 है और जनगणना विभाग की परिभाषा के अनुसार नगर माने जाते हैं, ग्रामीण मूल्य-व्यवस्था बनाये हुए हैं। एक नगर का व्यक्ति जब गांव में जाता है तो वह ग्रामीण एवं नगरीय मूल्यों में स्पष्ट अन्तर देख सकता है। मोहाना गांव के लोग जो शहरों से भी सम्पर्क बनाये हुए हैं, गांव में भी अपनी विशिष्ट प्रतिष्ठा रखते हैं। लोग उनको सुनते हैं, प्रशंसा करते हैं और समय आने पर उनकी सलाह और सहायता लेते हैं। ग्राम एवं शहर के मध्य कड़ी बनाये रखने वाले ये लोग भी मानते हैं कि शहर और गांव भिन्न-भिन्न हैं।

गांव वालों की धारणा है कि शहर के लोगों का व्यवहार असामान्य होता है उनका जीवन आराम का है, उनके व्यवहार में नैतिकता का अभाव होता है, वे नास्तिक और स्वार्थी होते हैं। जब कोई पिता अपने

...होगी कि ग्रामी... सामाजिक संरचना तथा जीवन प्रक्रिया अधिकांशतः विभिन्न पर्यावरणों का परिणाम है।

गांव (ग्रामीण समुदाय) का अर्थ एवं परिभाषा

[MEANING AND DEFINITION OF VILLAGE (RURAL COMMUNITY)]

विभिन्न विद्वानों ने गांव या 'ग्रामीण' शब्द की अनेक व्याख्याएं प्रस्तुत की हैं। कुछ व्यक्तियों का मत है कि जहां आर्थिक एवं सामाजिक दृष्टि से पिछड़े हुए लोग रहते हों, उस क्षेत्र को गांव कहा जाय। दूसरी ओर कुछ विद्वानों ने गांव या 'ग्रामीण' शब्द उनके लिए उपयुक्त माना है, जहां कृषि को मुख्य व्यवसाय के रूप में अपनाया गया हो। इसी आधार पर कृषक और ग्रामीण को पर्याय के रूप में प्रयोग किया जाता है। ग्रामीण की एक व्याख्या 'नगरीय' शब्द के विपरीत की गयी है अर्थात् नगरीय विशेषताओं के विपरीत विशेषताओं वाला क्षेत्र ग्रामीण है। 'ग्रामीण' को जनसंख्या के आधार पर भी परिभाषित किया जाता है। प्रत्येक देश में एक निश्चित जनसंख्या वाले क्षेत्र को ग्राम कहा गया है और उससे अधिक जनसंख्या होने पर वह नगर की श्रेणी में आ जाता है। **श्रीवास्तव** ने 'ग्रामीण' एवं 'नगरीय' की व्याख्या मनुष्य और उसके प्राकृतिक पर्यावरण के बीच अन्तःक्रिया के आधार पर की है। ग्रामीण अवस्था में मानव के प्रकृति के साथ निकट और प्रत्यक्ष सम्बन्ध होते हैं। **श्रीवास्तव** लिखते हैं "एक ग्रामीण क्षेत्र वह है जहां लोग किसी प्राथमिक उद्योग में लगे हैं, अर्थात् प्रकृति के सहयोग से वस्तुओं का प्रथम बार उत्पादन करते हों।"

बट्रांण्ड ने 'ग्रामीणता' के निर्धारण में दो आधारों (1) कृषि द्वारा आय अथवा जीवन-यापन, (2) कम घनत्व वाला जनसंख्या क्षेत्र, को प्रमुख माना है। **मैरिल** और **एलरिज** लिखते हैं, "ग्रामीण समुदाय के अन्तर्गत

को बताते हुए ... परम्परात्मक स्थली माना जाता है। ऐसा कहा जाता है कि ... सामान्यतः भारत जातियों ... सम्प्रदायों की ... यहां की हवा में भी जाति घुली हुई और यहां तक कि मुसलमान तथा ईसाई भी इससे अछूते नहीं बचे हैं।''

जाति का अर्थ एवं परिभाषा
(MEANING AND DEFINITION OF CASTE)

जाति शब्द अंग्रेजी भाषा के कास्ट 'Caste' का हिन्दी अनुवाद है। अंग्रेजी के Caste शब्द की व्युत्पत्ति पुर्तगाली भाषा के 'Casta' शब्द से हुई है जिसका अर्थ मत, विभेद तथा जाति से लिया जाता है। जाति शब्द की उत्पत्ति का पता सन् 1665 में **ग्रेसिया-डी ओरेटा** नामक विद्वान ने लगाया। उसके बाद फ्रांस के **अब्बे डुब्वाय** ने इसका प्रयोग प्रजाति के सन्दर्भ में किया। विभिन्न विद्वानों ने जाति को परिभाषित करने का प्रयास किया है :

मजूमदार एवं **मदान** के अनुसार, जाति एक बन्द वर्ग है।''

कूले के शब्दों में, ''जब एक वर्ग पूर्णतः आनुवंशिकता पर आधारित हो, तो हम उसे जाति कहते हैं।''

इन दोनों परिभाषाओं में इस बात पर जोर दिया गया है कि जाति की सदस्यता जन्म पर आधारित ...ती है। कोई भी व्यक्ति अपने गुणों, सम्पत्ति एवं शिक्षा में वृद्धि करके या व्यवसाय परिवर्तन करके जाति ...हीं बदल सकता है। व्यक्ति जिस जाति में जन्म लेता है, जीवनपर्यन्त उसी का सदस्य बना रहता है।

सर रिजले के अनुसार, ''जाति परिवारों या परिवारों के समूहों का एक संकलन है जिसका कि सामान्य ...म है, जो एक काल्पनिक पूर्वज—मानव या देवता से सामान्य उत्पत्ति का दावा करता है, एक ही परम्परात्मक ...वसाय करने पर बल देता है और एक सजातीय समुदाय के रूप में उनके द्वारा मान्य होता है जो अपना ...ा मत व्यक्त करने के योग्य हैं।'' हट्टन ने रिजले की परिभाषा की आलोचना करते हुए लिखा है कि रिजले ने ...ति एवं गोत्र में भेद नहीं किया है। एक काल्पनिक पूर्वज से उत्पत्ति गोत्र की मानी जाती है जाति की नहीं।

जे. एच. हट्टन के अनुसार, ''जाति एक ऐसी व्यवस्था है जिसके अन्तर्गत एक समाज अनेक आत्म-केन्द्रित एक-दूसरे से पूर्णतः पृथक् इकाइयों (जातियों) में विभाजित रहता है। इन इकाइयों के बीच पारस्परिक ...न्ध ऊंच-नीच के आधार पर सांस्कारिक रूप से निर्धारित होते हैं।''

केतकर के अनुसार, ''जाति एक सामाजिक समूह है जिसकी दो विशेषताएं हैं—(i) सदस्यता के व्यक्तियों तक सीमित है जिन्होंने उसी जाति में जन्म लिया हो, और इस प्रकार से पैदा हुए व्यक्ति

संस्थाओं और ऐसे व्यक्तियों का संकलन होता है जो छोटे से केन्द्र के चारों ओर संगठित होते हैं तथा सामान्य प्राकृतिक हितों में भाग लेते हैं।'' ग्रामीण समुदाय में मानव के सभी हितों की पूर्ति होती है।

सिम्स के अनुसार, ''समाजशास्त्रियों में 'ग्रामीण समुदाय' को ऐसे बड़े क्षेत्रों में रखने की प्रवृत्ति रही है, जिसमें समस्त अथवा अधिकतर प्रमुख मानवीय हितों की पूर्ति होती है।''

सेण्डरसन ग्रामीण समुदाय को परिभाषित करते हुए लिखते हैं, ''एक ग्रामीण समुदाय में स्थानीय क्षेत्र के लोगों की सामाजिक अन्तःक्रिया और उनकी संस्थाएं सम्मिलित हैं जिसमें वह खेतों के चारों ओर बिखरी झोपड़ियों तथा पुरवा या ग्रामों में रहती हैं और जो उनकी सामान्य क्रियाओं का केन्द्र है।''

इन्साइक्लोपीडिया ऑफ सोशियल साइन्सेज के अनुसार, ''एकाकी परिवार से बड़ा सम्बन्धित एवं असम्बन्धित लोगों का समूह जो एक बड़े मकान अथवा निवास के अनेक स्थानों पर रहता हो, घनिष्ठ सम्बन्धों में आबद्ध हो तथा कृषि योग्य भूमि पर मूल रूप से संयुक्त रूप में कृषि करता हो, ग्राम कहलाता है।''

फेयरचाइल्ड के अनुसार, ''ग्रामीण समुदाय पड़ोस की अपेक्षा विस्तृत क्षेत्र है जिसमें आमने-सामने के सम्बन्ध पाये जाते हैं, जिसमें सामूहिक जीवन के लिए अधिकांशतः सामाजिक, शैक्षणिक, धार्मिक एवं अन्य सेवाओं की आवश्यकता होती है और जिसमें मूल अभिवृत्तियों एवं व्यवहारों के प्रति सामान्य सहमति होती है।''

इस प्रकार **ग्राम या ग्रामीण समुदाय वह क्षेत्र है जहां कृषि की प्रधानता, प्रकृति से निकटता, प्राथमिक सम्बन्धों की बहुलता, जनसंख्या की कमी, सामाजिक एकरूपता, गतिशीलता का अभाव, दृष्टिकोणों एवं व्यवहारों में सामान्य सहमति, आदि विशेषताएं पायी जाती हैं।** ग्रामीण समुदाय की विशेषताओं के अध्ययन से हम इनके बारे में स्पष्ट जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

Paper II PIONEERS OF INDIAN SOCIOLOGY

Unit I: Radha Kamel Mukerjee: Social structure of values. Social Ecology.
D.P.Mukerjee: Cultural diversities, Modernization.
Andre Betille: Social Stralification, Peasant Society and Folk Culture.

Unit II: G.S.Ghurye: Caste, Rural Urban Community.
Iravati Karve : Kinship in India.

Unit III: M.N.Srinivas: Sankritization, Secularization, and Dominant Caste.
S.C.Dubey: Indian Village, Tradition, Modernization and Development.
10
Unit IV: M.S.A. Rao, TK Ooman: Social Movements in India.
Yogendra Singh: Modernization of Indian Tradition,
Social change in India: Culture and resilence.

Essential readings:

Dubey, S.C.: Society in India, New Delhi.National Book Trust.
Dubey, S.C. : Indian Village, London Routledge (1995)
Dubey, S.C.: India's Changing Village, London Routledge(1958)
M.N.Srinivas: India: Social Structure New Delhi, Hindustan Publishing Corporation. 1980
M.N.Srinivas: Social Change in Modern India, California, Berkeley University of California University Press 1963.

जाति-प्रथा के कार्य (भूमिका) अथवा महत्व
[FUNCTIONS (ROLE) OR IMPORTANCE OF CASTE-SYSTEM]

वर्तमान में जाति-प्रथा को एक निरर्थक एवं हानिप्रद संस्था कहना एक फैशन-सा बन गया है, विशेषकर समाज-सुधारकों, शिक्षितों एवं राजनेताओं में जाति की आलोचना करना एक रिवाज-सा हो गया है। आज दिनोंदिन जाति-प्रथा के विरोधी भावों में वृद्धि होती जा रही है। वर्तमान में जाति का स्वरूप विघटित हो रहा है, किन्तु प्राचीनकाल में जाति ने व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के लिए महत्वपूर्ण कार्य किये हैं। **हट्टन** ने जाति द्वारा किये जाने वाले कार्यों को तीन भागों में विभक्त किया है—(I) व्यक्तिगत जीवन से सम्बन्धित कार्य, (II) जातीय समुदाय के लिए कार्य, (III) समाज और सम्पूर्ण राष्ट्र के लिए जाति द्वारा किये जाने वाले कार्य।

(I) सदस्यों के व्यक्तिगत जीवन में जाति के कार्य या लाभ

जाति व्यक्ति के जीवन पर अमिट प्रभाव डालती है और उसका अन्य लोगों से सम्बन्ध निर्धारण करती है। व्यक्ति के लिए जाति निम्नांकित कार्य करती है :

(1) **सामाजिक स्थिति का निर्धारण**—जाति के आधार पर ही व्यक्ति की समाज में स्थिति निर्धारित होती है जिसे सम्पत्ति, निर्धनता, सफलता, असफलता और व्यक्तिगत गुण-दोष के आधार पर बदला नहीं जा सकता। यह सामाजिक स्थिति तब तक बनी रहती है जब तक कि वह जाति के नियमों का उल्लंघन न करे।

(2) **मानसिक सुरक्षा**—जाति प्रत्येक व्यक्ति का पद और कार्य जन्म से ही निश्चित कर देती है। प्रत्येक व्यक्ति यह जानता है कि उसे किस समूह में विवाह करना है, किस प्रकार के सामाजिक, धार्मिक एवं राजनीतिक कार्यों में भाग लेना है। यह सब पूर्व-निर्धारित होने से व्यक्ति को मानसिक सन्तोष एवं सुरक्षा प्राप्त होती है।

(3) **व्यवसाय का निर्धारण**—प्रत्येक जाति का एक परम्परागत व्यवसाय होता है। इसलिए व्यक्ति के सामने व्यवसाय चुनने की समस्या नहीं होती और न ही व्यावसायिक प्रतिस्पर्द्धा ही पायी जाती है। बचपन से व्यक्ति को जातीय व्यवसाय का प्रशिक्षण मिलने से वह उसमें दक्ष भी हो जाता है।

(4) **वैवाहिक समूह का निर्धारण**—जाति ही यह तय करती है कि व्यक्ति अपना जीवन-साथी किस समूह में से चुनेगा, इस सन्दर्भ में व्यक्ति को जातीय नियमों का पालन करना होता है।

(5) **सामाजिक सुरक्षा**—प्रत्येक जाति की एक जाति पंचायत एवं जाति संगठन होता है। व्यक्ति पर किसी भी प्रकार का संकट आने, बीमारी, बुढ़ापा एवं दुर्घटना के समय जाति के सदस्य व्यक्ति की सहायता करते हैं।

(6) **व्यवहारों पर नियन्त्रण**—प्रत्येक जाति के अपने कुछ नियम एवं प्रतिबन्ध होते हैं जिनके द्वारा व्यक्ति के व्यवहारों को नियन्त्रित किया जाता है। जातीय नियमों का उल्लंघन करने वाले को जाति से बहिष्कृत कर दिया जाता है।

व्यक्ति के लिए जाति का महत्व बताते हुए **मजूमदार** एवं **मदान** लिखते हैं, "एक स्थायी वातावरण या अवस्था के अन्तर्गत सामाजिक व आर्थिक सुरक्षा प्रदान करने के लिए जाति, व्यक्तियों की प्रतिरक्षा की प्रमुख व्यवस्था है जो कि उनकी परिवर्तनशील क्षमताओं पर आधारित नहीं है।"

(II) जाति समुदाय से सम्बन्धित कार्य या लाभ

जाति व्यक्ति के लिए ही नहीं वरन् सम्पूर्ण जाति समुदाय के लिए भी अनेक कार्य करती है :

(1) **धार्मिक भावना की रक्षा**—प्रत्येक जाति के देवी-देवता एवं धार्मिक विधि-विधान होते हैं जिनकी जाति के सदस्य प्राण-पण से रक्षा करते हैं। सामान्य मान्यता यह है कि यह जाति ही है जो जनता के धार्मिक जीवन से अपने सदस्यों की स्थिति को निश्चित करती है।

(2) **रक्त की शुद्धता बनाये रखना**—एक जाति के व्यक्ति अपनी ही जाति में विवाह करते हैं और इससे रक्त की शुद्धता बनी रहती है और अन्य जातियों के रक्त दोष नहीं आ पाते हैं।

(3) **सामाजिक स्थिति का निर्धारण**—प्रत्येक जाति अपने समुदाय के लिए जाति संस्तरण में निश्चित सामाजिक स्थिति को निर्धारित करती है। **मजूमदार** एवं **मदान** लिखते हैं कि सामूहिक प्रयत्न और आन्दोलन

Theory of values

Q. डॉ० राधाकमल मुखर्जी का संक्षिप्त जीवन परिचय दीजिए। और उनके मूल्यों के सिद्धान्त की विवेचना कीजिए।

Ans → अपने मूल सिद्धान्तों के फलस्वरूप डॉ० राधाकमल मुखर्जी का स्थान विश्व के महानतम समाजशास्त्रियों में माना जाता है। डॉ० मुखर्जी का जन्म 1809 ई० मे कलकत्ता में हुआ था। उनके पिता एक प्रसिद्ध वकील थे। आरम्भ से ही डॉ० मुखर्जी को भारतीय एवं पाश्चात्य साहित्य को पढ़ने का अवसर प्राप्त हुआ। और भारतीय दर्शन के विषय में उन्हे अच्छी जानकारी प्राप्त हो गई। डॉ० मुखर्जी ने इतिहास का भी गहन अध्ययन किया। कलकत्ता की गन्दी बस्तियों और दरिद्रता को देखकर अर्थशास्त्र की ओर उनका विशेष झुकाव हुआ। तथा उन्होंने समाज कल्याण कार्यों मे योगदान दिया। डॉ० विनय कुमार सरकार का उनपर अत्यन्त प्रभाव पड़ा। 1921 ई० मे वे लखनऊ विश्व-विद्यालय में अर्थशास्त्र विभाग के अध्यक्ष बनाये गये। 1954 से 57 ई० तक वे लखनऊ विश्व-विद्यालय के कुलपति रहे। 24 Aug 1963 ई० को उनकी मृत्यु हो गई। डॉ० मुखर्जी के सामाजिक विचारों में उनके सामाजिक मूल्य संबंधी विचार अत्यन्त महत्वपूर्ण है। उन्होंने सामाजिक मूल्यों पर अत्यन्त विस्तृत और विलक्षण रूप से विचार किया है। उनकी मौलिक विशेषता यह है कि उन्होंने मूल्यों को रहस्यवादी आधार पर प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। मूल्यों से संबंधित डॉ० मुखर्जी के विचारों की चर्चा निम्न प्रकार कर सकते है :—

Signature.............